पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2012-14 प्रकाशित: 16.07.2014 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

योगनिष्ठ स्वामी दिव्यानन्द जी का
राष्ट्रीय ''अमृत महोत्सव''
रविवार, 16 नवम्बर 2014,
प्रात: 10 से 2 बजे तक
योग निकेतन, पंजाबी बाग, दिल्ली
कृपया तिथियां नोट कर लें
स्वामी आर्यवेश - डा.अनिल आर्य
अध्यक्ष व मुख्य संयोजक
अभिनन्दन समिति

वर्ष-30 अंक-28 श्रावण-2071 दयानन्दाब्द 190 16 जुलाई से 31 जुलाई 2014 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.07.2014, E-mail : aryayouthn@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

हरियाणा की आर्य समाजों ने सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश का किया अभिनन्दन

आर्य समाज के संगठन को मजबूत बनाने के लिये पूरे मनोयोग से कार्य करूंगा-स्वामी आर्यवेश

रविवार, 13 जुलाई 2014, हरियाणा की आर्य समाजों की ओर से स्वामी रामवेश जी की अध्यक्षता में स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ ग्राम टिटोली, रोहतक में स्वामी आर्य वेश जी के अभिनन्दन का भव्य कार्यकम रखा गया। स्वामी आर्यवेश ने विश्वास दिलाया कि वह सभी धड़ों की एकता के लिये पूरा प्रयास करेंगे।

चित्र में समारोह को सम्बोधित करते डा.अनिल आर्य, मंच पर स्वामी आर्य वेश जी, स्वामी चन्द्रवेश जी, स्वामी रामवेश जी, श्री महेन्द्र शास्त्री, आचार्य वेदव्रत शास्त्री आदि। द्वितीय चित्र में स्वामी आर्यवेश जी को स्मृति चिन्ह भेंट करते डा. अनिल आर्य, श्री विरजानन्द, श्री रामकुमार सिंह, श्री धर्मपाल आर्य, आचार्य हरपाल शास्त्री (गुजरात)। समारोह को सफल बनाने में आचार्य सन्तराम जी, सुमन देशवाल, ब्र.दीक्षेन्द्र, ब्र.रामफल, बहिन पूनम व प्रवेश आर्या, श्री सीताराम आर्य, डा.लक्ष्मण दास जी, प्रो.श्योताज सिंह आदि ने विशेष योगदान दिया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् उत्तर प्रदेश

के तत्वावधाान में

प्रान्तीय कार्यकर्ता सम्मेलन एवम्
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के नवनियुक्त प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का सार्वजनिक अभिनन्दन

रविवार, 3 अगस्त 2014,प्रात: 9 बजे से दोपहर 2 बजे तक

स्थान: आर्य समाज, शामली, मुजफ्फर नगर, उ.प्र.

धवजारोहण: श्री रघुवीरसिंह आर्य (जिला प्रधान)

अध्यक्षता: श्री आनन्दप्रकाश आर्य (प्रान्तीय अध्यक्ष)

मुख्य अतिथि:

डा. संजीव बालियान (केन्द्रीय राज्यमंत्री,भारत सरकार)

मुख्य वक्ता: डा.अनिल आर्य(राष्ट्रीय अध्यक्ष,के.आ.यु.प.)

विशिष्ट अतिथि: श्री मायाप्रकाश त्यागी(गाजियाबाद)

श्री पूरणचन्द आर्य (मंत्री,जिला सभा)

श्री अरविन्द संगल (चेयरमैन, नगर पालिका शामली)

डा. वीरपाल विद्यालंकार, श्री सुनील गर्ग, श्री मनोहरलाल चावला

सभी आर्य जन भारी संख्या में पंहुचे

सुशील शर्मा	राजकुमार सिंह	प्रवीन आर्य	राजपाल आर्य	दिनेश आर्य
संयोजक	प्रान्तीय प्रभारी	प्रान्तीय मन्त्री	प्रान्तीय प्रधान	मन्त्री समाज

दिल्ली चलो दिल्ली चलो दिल्ली चलो

मिशन-25

यानि की 12 से 25 वर्ष के युवा लक्ष्य:
केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का
36वां राष्ट्रीय अधिवेशन

रविवार, 7 सितम्बर 2014,

प्रात: 9 बजे से सायं 5 बजे तक

योग निकेतन सभागार, रोड न. 78,

वैस्ट पंजाबी बाग, दिल्ली

500 आर्य युवक पूर्ण गणवेश में भाग लेंगे

यज्ञ:-प्रात: 9 से 10 तक, प्रात: राश:-प्रात: 10 से 10.45,

ऋषि-लंगर:-1.30 से 2 तक व

सांय 5 से 6 बजे तक:-जलपान (पकोड़े-जलेबी-चाय)

सभी आर्य युवक, आर्य जन तैयारी प्रारम्भ कर दें

आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित है।

डा.अनिल आर्य	महेन्द्र भाई	धर्मपाल आर्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामन्त्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

आस्था और अंधविश्वास

-मनमोहन कुमार आर्य

आजकल आस्था शब्द का प्रयोग इसके वास्तविक अर्थों में न करके इस शब्द को स्वार्थ सिद्धि और अपनी कमियों व अज्ञान को छुपाने में प्रयोग किया जा रहा है। आस्था का अर्थ क्या है? जब हम इस शब्द पर विचार करते हैं तो इसका अर्थ होता है कि हम जिस बात को मानते व करते हैं उसका हमें पूरा ज्ञान है। उसे हम तर्क, प्रमाण, युक्ति एवं बड़े-बड़े विद्वानों के वाक्यों व कथनों से पुष्ट व सिद्ध कर सकते हैं। आस्था के विरूद्ध यदि कोई वाद-विवाद होता है तो हम विषय से भागते नहीं, हटते नहीं, उल-जलूल दलीलें नहीं देते अपितु विरोधी तर्कों व आरोपों का इस प्रकार से उत्तर देतें हैं कि जैसे कक्षा में विद्यार्थी के प्रश्नों का उत्तर गुरूजी या अध्यापक देते हैं। ऐसा ही प्रश्नोपनिषद के ऋषि व सत्यार्थ प्रकाश में प्रश्नों को उपस्थित कर महर्षि दयानन्द ने समाधान किये हैं, इन्होंने आस्था के नाम पर प्रश्नों को टाला नहीं अपितु उनके सयुक्तिक उत्तर दिए। अब हम आस्था के बारे में उदाहरण देकर उसका वास्तविक व वर्तमान विकृत स्वरूप दोनों को प्रस्तुत करते हैं। ईश्वर की यदि हम चर्चा करें तो यह सिद्ध होता है कि इस संसार को बनाने, चलाने व अन्त में इसका विनाश व प्रलय करने वाली शक्ति का नाम ईश्वर है। सृष्टि की रचना का कार्य अपौरूषेय सत्ता द्वारा ही सम्भव है, न तो यह सृष्टि स्वयं बन सकती है और न संसार के सब मनुष्य इस सम्पूर्ण सृष्टि को एक साथ मिलकर बना सकते हैं। सृष्टि को बनाने की बात तो क्या, इसके एक-एक अवयव अर्थात् जल, वायु या अग्नि वा ऐसे अन्य किसी व किन्हीं पदार्थों को ही बना सकते हैं। सूर्य, चन्द्र, पृथिवी व ब्रह्माण्ड में स्थित लोक-लोकान्तरों को बनाना तो संसार की सारी जन-संख्या के लिए भी असम्भव है। विचार करने पर यह भी ज्ञात होता है कि हमारा शरीर व इसकी सभी इन्द्रियां, यन्त्र व उपकरण भी उसी अपौरूषेय शक्ति ईश्वर के द्वारा बनाये गये हैं। वह शक्ति व सत्ता सर्वव्यापक, निराकार, अदृश्य व अति सूक्ष्म, सत्य, चेतन, आनन्द से परिपूर्ण, सर्वज्ञ आदि स्वाभाविक गुणों से युक्त व पूर्ण होनी सिद्ध होती है। ऐसा ही ईश्वर का स्वरूप चार वेदों, उपनिषद्, दर्शन ग्रन्थों व मनुस्मृति आदि में वर्णित है। अब ईश्वर की उपासना व पूजा की बात आती है। प्राचीन परम्परा के अनुसार उसकी उपासना योग विधि से एक आसन में स्थित होकर आत्मा व मन को उसमें लगा देने, उसके गुणों का ध्यान करने व गायत्री मन्त्र का अर्थ पूर्वक चिन्तन व विचार करके की जाती है या की जा सकती है। अन्य कोई प्रकार उसका नहीं है। परन्तु आजकल हम क्या देखते हैं कि अज्ञानी व स्वार्थी लोगों ने मध्यकाल में अनार्ष ग्रन्थ पुराणों की रचना करके लोगों को मूर्तिपूजा की आदत डाल दी। अज्ञानी लोग शीघ्र ही अन्धविश्वासों का शिकार हो जाते हैं या उसमें फंस जाते हैं। पहले तो राम, कृष्ण, विष्णु व शिव आदि कुछ इने-गिने महापुरूषों की ही पूजा-उपासना मूर्तिपूजा के द्वारा की जाती थी। परन्तु हम देखते हैं कि समय के साथ साथ लोगों का अज्ञान व स्वार्थों में वृद्धि होती गयी और इसी प्रकार भगवानों व इष्टदेवों की संख्या भी बढ़ती जा रही है। क्या मूर्ति पूजा करना सत्य व यथार्थ है? क्या ऐसा करने से ईश्वरोपासना से जो लाभ होते हैं वह मूर्तिपूजकों को भी होते हैं? इस पर कोई विचार ही नहीं करता? यदि मूर्तिपूजा करने वाले यह कहें कि हमने सन्तान मांगी थी और मूर्ति पूजा या मन्नत मांगने से हमारी वह मन्नत पूरी हो गई, तो प्रश्न है कि कुत्ते, बिल्ली, गाय, भैंस, जंगली जानवरों, सांप, बिच्छू आदि सभी की सन्तानें हो रही हैं तो क्या यह मूर्तिपूजा करते हैं? इसका मूर्ति पूजा करने वालों के पास कोई उत्तर नहीं है? यही हाल अन्य मन्नतों की पूर्ति का भी है। मूर्ति पूजा व गंगा स्नान आदि से जो मन्नतें हिन्दुओं की पूरी होती हैं, वहीं मान्यतायें ईसाई, मुसलमानों, बौद्ध व जैनियों की भी पूरी होती हैं जो कि हिन्दू देवी देवताओं को मानते ही नहीं हैं। इससे सिद्ध हो जाता है कि मूर्तिपूजा के बारे में जो दलीलें दी जाती हैं वह सब गलत हैं। इन गलत कृत्यों को आस्था का नाम देना बुद्धि का दिवाला निकालने के समान है। आस्था सच्चे सर्वव्यापक की वेदों व वेदसम्मत शास्त्रों के अनुसार धारणा व ध्यान द्वारा उपासना व पूजा करने को कहते हैं जिससे ईश्वर की सहायता प्राप्त होती है, ईश्वर व आत्मा का साक्षात्कार प्राप्त होता है, इस सच्ची उपासना में मनुष्य अपना जो समय व्यतीत करता है वह क्रियमाण कर्म, संचित कर्म, प्रारब्ध व इनसे मिलने वाले सुख व शान्ति के रूप में प्राप्त होते हैं। अतः इस विचार व चिन्तन से यह ज्ञात हुआ कि मूर्तिपूजा एवं अज्ञानता पूर्वक किये जाने वाले किसी भी कार्य को आस्था का नाम देना गलत व अविवेकपूर्ण कार्य है, इससे उद्देश्यों व इच्छाओं की पूर्ति व सिद्धि नहीं होती है।

आईये, अब थोड़ी चर्चा अन्धविश्वासों की भी कर लेते हैं। अन्धविश्वासों के सन्दर्भ में हमें लगता है कि महर्षि दयानन्द के आविर्भाव तक किसी को पता ही नहीं था कि अन्धविश्वास नाम का भी कोई शब्द होता है। सभी सही व गलत कार्यों को जो धार्मिक दृष्टि से किये जाते थे, धर्म, मत या धार्मिक परम्पराओं जैसे नामों से जाने जाते थे। महर्षि दयानन्द ने सभी वेद विरूद्ध व अवैदिक कार्यों, परम्पराओं, ईश्वरोपासना के नाम पर मूर्तिपूजा व यज्ञों में पशुओं के मांस की आहुति, सतीप्रथा, फलित ज्योतिष, बेमेल विवाह, अवतारवाद व उनकी मूर्ति व अन्य सभी प्रकार से पूजा व उपासना आदि को अन्ध-विश्वास की संज्ञा दी। जिस प्रकार से विद्या व अविद्या, ज्ञान व अज्ञान शब्द हैं उसी प्रकार से विश्वास व अन्ध-विश्वास शब्द भी हैं। इसी प्रकार आस्था व अनास्था दो शब्द हैं। आस्था शब्द ज्ञान, विद्या, श्रद्धा व विश्वास के लिए प्रयोग में लाया जाता है और अनास्था, अन्धविश्वास, अज्ञान, अश्रद्धा व अविद्या के लिए प्रयोग में लाया है। ईश्वर निराकार व सर्वव्यापक है, इसमें उपासक व भक्त की आस्था का होना, सच्ची आस्था है व उसके विपरीत मूर्ति, किसी नदी, किसी मनुष्य व महापुरूष आदि में पूज्य व उपासना की बुद्धि व मानसिकता का होना अनास्था व अन्धी-श्रद्धा, अन्ध-विश्वास व अन्धी-आस्था कही जायेगी। अन्ध विश्वास व अनास्था या अन्धी-आस्था समानार्थक, एक दूसरे के पूरक व पर्यायवाची शब्द हैं। वेदों के आधार पर महर्षि दयानन्द ने संसार की सर्वांगीण उन्नति व कल्याण का एक सर्वोत्तम सिद्धान्त दिया है। सिद्धान्त यह है कि अविद्या का नाश व विद्या की वृद्धि करनी चाहिये। इस सिद्धान्त को आस्था के सन्दर्भ में कहें तो अनास्था, अन्धी-आस्था, अन्धविश्वासों का नाश करना चाहिये और सच्ची आस्था, सच्चे विश्वास, सच्ची श्रद्धा, सच्ची भक्ति व सच्ची उपासना की वृद्धि करनी चाहिये। हम समझते हैं कि इस सिद्धान्त से सारा देश व समाज अनभिज्ञ ही है। लोगों में अज्ञानता के जो संस्कार, अन्ध परम्पराओं का अभ्यास आदि हैं, वह इनसे उत्पन्न मूढ़ता के कारण, सकारात्मक कुछ उत्तम व सत्य मान्यताओं के बारे में सोच ही नहीं पाते हैं। इस अज्ञान, अन्धी आस्था व अन्धविश्वास के संस्कारों को तो सच्चा गुरू ही दूर कर सकता है जिनका हमारे समाज व देश में अभाव दिखाई देता है। आज धर्म व व्यवसाय दोनों एक दूसरे के पूरक व पर्याय बन कर काम कर रहें हैं। सबको अपनी-अपनी केवल आर्थिक उन्नति की चिन्ता है। धर्म-कर्म, सेवा, परोपकार आदि का स्थान प्राथमिक न होकर बहुत बाद में आता है अतः अन्धविश्वास को दूर करना कठिन व कठिनतम् है। महर्षि दयानन्द ने अपने गुरू प्रज्ञाचक्षु विरजानन्द जी के कहने पर व अपने विवेक व उत्कृष्ट ज्ञान के कारण यह कार्य किया। उनको मात्र 10 वर्ष का अल्प समय ही मिला जिसमें उन्होंने अभूतपूर्व कार्य किया। हम तो अनुभव करते हैं कि उन्होंने अपने विचारों से अपने समय में सारे संसार में आध्यात्मिक क्रान्ति की। कोई भी मत, पन्थ, मजहब, सम्प्रदाय उनकी आध्यात्मिक वैचारिक क्रान्ति से बचा नहीं, सब पर उसका कुछ कम या अधिक सकारात्मक प्रभाव हुआ। आज हमारे पौराणिक भाई जो पहले विदेश की यात्रा में पाप मानते थे तथा विदेश गये व्यक्ति को धर्म से च्युत कर देते थे, विधर्मी के हाथ का भोजन करने व जल पीने पर भी जिनका धर्म छूट जाता था, विधवा विवाह के विरोधी थे, एक ही जाति व समुदाय में विवाह के पक्षधर थे, आज सबने अपने इन कार्यों को छोड़ कर महर्षि दयानन्द के विचारों को स्वीकार कर लिया है। परन्तु बहुत से लोगों का मूर्तिपूजा एवं अन्य अन्ध-विश्वासों से जीवनयापन होता है, अतः वह आज भी यथावत् जारी है। यही स्थिति सभी मत-मतान्तरों में न्यूनाधिक है। हमारे यूरोप के वैज्ञानिक तो इसी कारण से ईश्वर तक के अस्तित्व को अस्वीकार कर चुके हैं। उन्हें वेदों के आधार पर ईश्वर के स्वरूप व उपासना तथा वैदिक सिद्धान्तों को बताने वाला कोई है ही नहीं और न इस कार्य के लिए उनके पास समय है। ईश्वर व जीवात्मा के स्वरूप के बारे में जिज्ञासा करने व दुःखों से मुक्ति के उपायों पर विचार करने तक का समय भी उनके पास नहीं है। उनका सारा समय तो वैज्ञानिक कार्यों, खोजों या फिर जीवन को सुविधापूर्वक व्यतीत करने में ही व्यतीत होता है। ऐसा ही सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहा है।

जब तक देश व समाज में अन्ध-विश्वास हैं, देश पूरी तरह से उन्नति नहीं कर सकता। सर्वांगीण उन्नति तभी कही जा सकती है कि जब अज्ञान, अन्धविश्वासों व झूठी आस्था, जिसे वर्तमान में आस्था का नाम दिया जा रहा है, का समूल अन्त हो। इसके लिए बच्चों व बड़ों को सोकर उठने व सोते समय इस वेद-भावना का पाठ करना चाहिये कि ''सत्य को ग्रहण करने व असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये, सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य व असत्य को विचार करके करने चाहियें। अविद्या, अज्ञान, अन्धाविश्वास, झूठी आस्था, अन्धी श्रद्धा का नाश करना चाहिये और विद्या, ज्ञान, सच्चे विश्वासों, सच्ची आस्था, व सच्ची श्रद्धा में वृद्धि करनी चाहिये।'' जब समाज व देश के सभी लोग वेदमन्त्रों के इन आशयों का विचार, चिन्तन व नियमित वाचन करेगें तभी देश की सच्ची उन्नति होगी। जब तक देश में मूर्तिपूजा, अवतारवाद, मृतकों मनुष्यों को सन्त आदि का नाम देकर उनसे इच्छाओं की पूर्ति, गुण-कर्म व स्वभाव का विचार किए बिना जन्म पर आधारित जाति-प्रथा, फलित ज्योतिष आदि विचार, मान्यतायें व व्यवहार जारी हैं, तब तक देश व समाज उन्नति नहीं कर सकते। खेद है कि आज के मत-मतान्तरों के अनुयायी व उनके गुरू महाराज इसको समाप्त करने के स्थान पर इन्हें पोषित कर रहे हैं। हमें यह भी अनुभव होता है कि आज के आधुनिक युग का एकमात्र प्रमुखतम् व सच्चा धर्मग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश व आर्याभिविनय सहित वेद, उपनिषद्, दर्शन, विशुद्ध मनुस्मृति की शिक्षायें व मान्यतायें आदि ही हैं। इन्हीं से झूठी आस्था व अन्धविश्वास समाप्त होगें। इसी साथ हम अपनी लेखनी को विराम देते हैं।

-196 चुक्खूवाला-2 , देहरादून-248001 / फोनः 09412985121

ग्रीष्मकालीन अवकाश में देश भर में आर्य युवा शिविरों की रही धूम

आर्य नेता श्री मायाप्रकाश त्यागी का अभिनन्दन करते सांसद डा.सत्यपाल सिंह व ऐमिटी शिक्षण संस्थान के निदेशक श्री आनन्द चौहान, श्री अजय चौहान, अल्का चौधरी व डा.अनिल आर्य। द्वितीय चित्र में शिक्षाविद् डा.डी.के.गर्ग का सम्मान करते सांसद डा.सत्यपाल सिंह, रामकुमार सिंह व विकास गोगिया।

करनाल में युवक चरित्र निर्माण शिविर सफलता पूर्वक सम्पन्न

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् करनाल शाखा के तत्वावधान में 18 जून से 22 जून 2014 तक युवक चरित्र निर्माण शिविर आर्य समाज, प्रेम नगर, करनाल में सोल्लास सम्पन्न हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य का स्वागत करते जिला अध्यक्ष स्वतन्त्र कुकरेजा, मंत्री हरेन्द्र चौधरी, शान्तिलाल आर्य, जिले सिंह आर्य, हरीश खुराना, अर्जुनदेव वर्मा, उपमहापोर श्री कृष्ण गर्ग व श्री अनिल गुप्ता सामने मैदान में आर्य युवक।

फरीदाबाद में युवक निर्माण शिविर शानदार सफलता से सम्पन्न

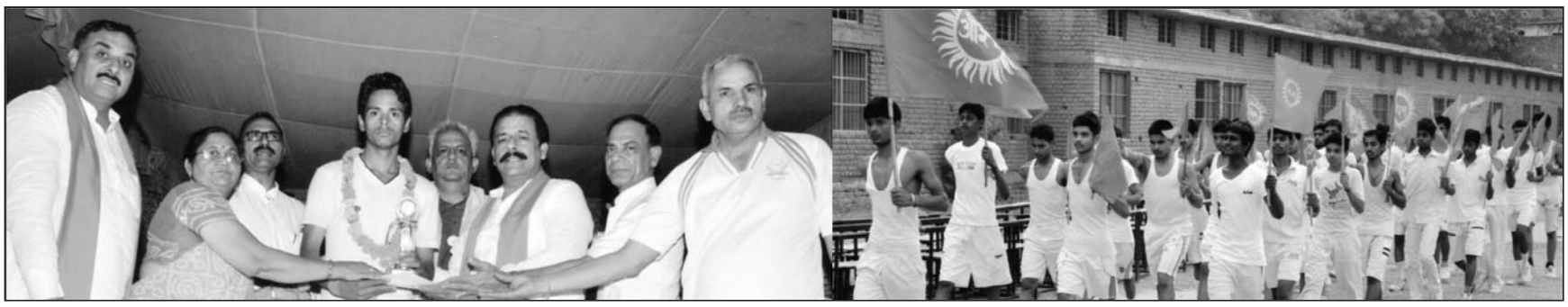

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् फरीदाबाद के तत्वावधान में 1 जून से 8 जून 2014 तक युवक चरित्र निर्माण शिविर राजकीय उच्च. माध्यमिक विद्यालय, एन.एच.3, फरीदाबाद में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। चित्र में विजेता युवक को पुरस्कृत करते डा. अनिल आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद की प्रधान श्रीमती विमला ग्रोवर, डा.जी.एस.आर्य, रामकुमार सिंह, अनिल हाण्डा, डा.वीरपाल विद्यालंकार व शिविर संयोजक श्री जितेन्द्र सिंह आर्य। प्रधान शिक्षक श्री सत्यपाल सिंह ने शिक्षण प्रदान किया, सामने दयानन्द की सेना परेड़ करते हुए।

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा गौतमबुद्धनगर (उ.प्र.) के प्रधान श्री महेन्द्रसिंह आर्य का अभिनन्दन करते श्री महेन्द्र भाई, श्री सूर्यदेव व्यायामाचार्य, आचार्य भानुप्रताप शास्त्री, डा.वीरपाल विद्यालंकार, श्री मायाराम शास्त्री व सामने ऐमिटी सभागार में आर्य युवक।

कर्मठ शिक्षक सौरभ गुप्ता का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य, डा.जयेन्द्र आचार्य,बहिन गायत्री मीना व डा.वीरपाल विद्यालंकार व द्वितीय चित्र में शिविरार्थी आर्य युवक यज्ञ करते हुए।

आर्य सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी का सार्वदेशिक सभा में हुआ भव्य स्वागत

बुधवार, 2 जुलाई 2014, सार्वदेशिक सभा, दयानन्द भवन, नई दिल्ली में पधारने पर स्वामी सुमेधानन्द जी का अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य, स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी सोम्यानन्द जी, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री व श्री आर. एस. तोमर, एडवाकेट। द्वितीय चित्र में जयपुर शिविर में पधारने पर डा. अनिल आर्य का केसरिया पगड़ी बांध कर स्वागत करते स्वामी सुमेधानन्द जी, साथ में श्री रामकृष्ण शास्त्री।

हापुड़ में युवक शिविर सम्पन्न व श्री राजीव परम का अभिनन्दन

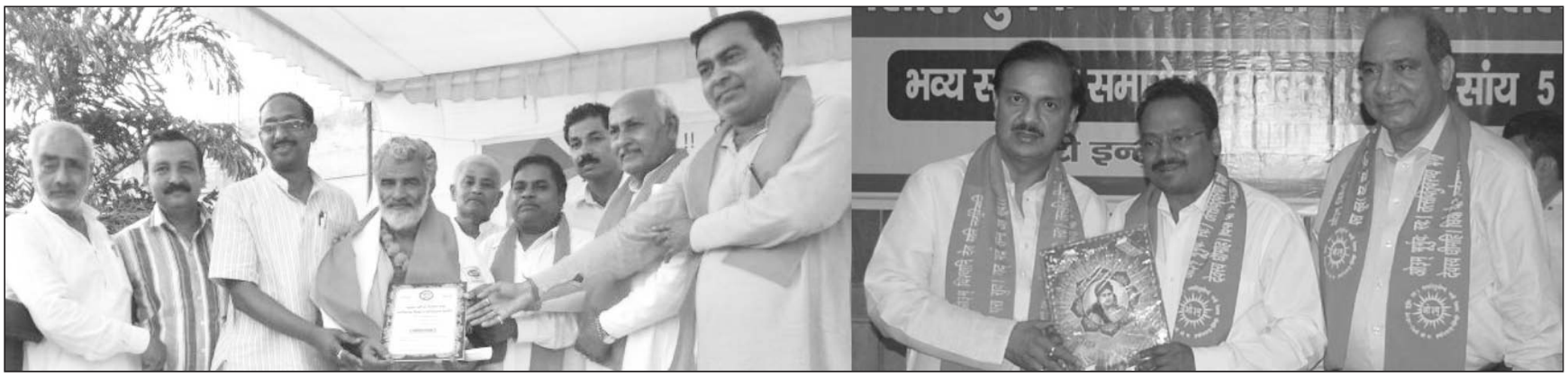

आर्य उपप्रतिनिधि सभा हापुड़ के तत्वावधान में युवक चरित्र निर्माण शिविर 22 जून से 29 जून 2014 तक आयोजित किया गया। चित्र में स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी का स्वागत करते सभा प्रधान श्री विकास अग्रवाल, अशोक आर्य, ज्ञानेन्द्र आर्य आदि। द्वितीय चित्र में श्री राजीव कुमार परम का सम्मान करते सांसद डा.महेश शर्मा व श्री आनन्द चौहान।

आर्य समाज, रोहिणी, दिल्ली की कर्मठ कार्यकर्त्री सुश्री सरोजनी दता का सम्मान करते सांसद डा. सत्यपाल सिंह,साथ में रामकुमार सिंह व विकास गोगिया। द्वितीय चित्र में श्री आनन्द चौहान का सम्मान करते डा.अनिल आर्य, रामकुमार सिंह व महेन्द्र भाई।

हापुड़ के श्री आनन्द आर्य का सम्मान व हमारे आर्य शिक्षक गण

ऐमिटी युवक शिविर समापन समारोह में उ.प्र. परिषद् प्रान्तीय अध्यक्ष श्री आनन्द प्रकाश आर्य व श्री नरेन्द्र आर्य का अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य। द्वितीय चित्र में शिक्षक गण श्री आनन्द चौहान, डा.अनिल आर्य,स्वामी आर्यवेश जी,राजीव परम,डा.डी.के.गर्ग, सूर्यदेव व्यायामाचार्य व महेन्द्र भाई के साथ।

श्री सी.एल.मोहन पुनः प्रधान निर्वाचित

1. आर्य समाज, मयूर विहार, फेज-2, दिल्ली के चुनाव में श्री सी. एल. मोहन-प्रधान, श्री ओमप्रकाश पाण्डेय, श्री लक्ष्मीचन्द गुप्ता-कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए।
2. आर्य समाज, प्रशान्त विहार, दिल्ली के चुनाव में श्री कृष्णचन्द पाहुजा-प्रधान, श्री सोहनलाल मुखी-मंत्री व श्री भूषण कोषाध्यक्ष चुने गये। तदर्थ बधाई।

फरीदाबाद में स्वामी आर्यवेश का अभिनन्दन

बुधवार, 23 जुलाई 2014 को सांय 5 से 7 बजे तक आर्य समाज, सैक्टर-19, फरीदाबाद में होगा। **- जितेन्द्र सिंह आर्य**

शोक समाचार

1. विश्व हिन्दु परिषद् के आचार्य गिरीराज किशोर जी का गत दिनों निधन हो गया।
2. पं.महेश चन्द, संगीत रत्न अलीगढ़ का गत दिनों निधन हो गया।
3. श्री दुलीचन्द बंसल का गत दिनों निधन हो गया।
4. श्री नन्दकिशोर कपूरिया का गत दिनों निधन हो गया।
5. श्री रामकिशन नागपाल (गन्नौर) का गत दिनों निधन हो गया।

युवा उद्घोष की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970